Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Business Management & Quality Assurance(e ISSN 2456-9291) Vol. 1, Issue, 01. 50-53p, April, 2017

National Research & Journal Publication

Review Article

भारतीय समाज एवं लैंगिक असमानता

डॉ. रचना प्रसाद

एसो0 प्रोफसर, समाजशास्त्र विभाग

विद्यावती मुकन्दलाल महिला महाविद्यालय, गाजियाबाद

(चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

Copyright©2017, *डॉ. रचना प्रसाद.* *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

परिचय

लैंगिक असमानता को समझने से पहले हमें यहाँ पहले लिंग के परिभाषा को स्पष्ट करना आवश्यक प्रतीत होता है। डॉ0 गोपी रमण प्रसाद सिंह ने अपनी पुस्तक लिंग एवं समाज में लिंग का अर्थ बताते हुए कहा है कि ''नारीवादी चिंतन का एक महत्वपूर्ण पहलू यौन एवं लिंग के भेद को स्पष्ट करना है। 'यौन' शब्द स्त्री पुरूष के बीच एक जैविक अर्थ की ओर इशारा करता है जबकि लिंग शब्द के साथ सामाजिक सांस्कृति संदर्भ जुड़ा है। सिमौन द बुआ का कहना है कि ''औरत पैदा नहीं होती बना दी जाती है।'' नारीवादियों का मानना है कि स्त्री पुरूष का जैविक संरचना का नारीत्व व पुरूषत्व के साथ जोड़कर दिखाने जाने वाले लक्षणों के बीच कोई अनिवार्य सहसम्बन्ध नहीं है। यह बच्चों के लालन–पालन की प्रक्रिया है जो लिंगों के बीच कुछ विशेष भिन्नताओं को स्थापित व पुष्ट करती है।

ऐसा देखा गया है कि लोग यौन एवं लिंग को समान अर्थों में प्रयोग करते हैं जबकि यह पूर्णतः गलत है। निवेदिता मेनन (नारीवादी विचारधारा में सेक्स जेंडर विभेद : नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे : 2001 : 8) लिखती है, 'सेक्स शब्द, पुरूष और स्त्री के बीच एक जैविक अर्थ की ओर इशारा करता है जबकि जेंडर का संबंध उसके साथ जुड़े सांस्कृतिक अर्थों से हैं।

नरेन्द्र कुमार सिंधी (समाजशास्त्रीय सिद्धांत : विवेचन एवं व्याख्या : 1998 : 253) का कहना है, ''यौन (पुरूष अथवा स्त्री) के बीच शारीरिक एवं जैविक अंतर सार्वभौमिक है और मूलभूत अंतर जननांगों की बनावट में होता है। इन अंतर के अलावा, नर–नारी में लम्बाई–चौड़ाई, आकार–प्रकार वक्ष–स्थलों में अंतर एवं शरीर के बालों की भिन्नता इत्यादि भी होते हैं, जो कि सार्वभौमिक एवं उदारविकास की वर्तमान स्थिति तक सार्वजनिक रहे हैं और इन्हीं अंतरों का लाभ उठाकर जोड–तोड़ की प्रक्रिया से पुरूषों ने नारी का शोषण किया है, जिसकी परिणीति असमानता की भावना, असुरक्षा की भावना और शक्ति को पुरूष तक केन्द्रित करने की वृतियों से स्पष्ट होती हैं।''

लैंगिक भेदभाव मुख्यतः स्त्रियों से सम्बन्धित समस्या है। सैद्धांतिक दृष्टि से भारतीस समाज में स्त्रियों की स्थिति को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है, परंतु व्यावहारिक दृष्टि से उनके साथ भेदभावपूर्ण रवैया तथा उनका तिरस्कार अपमान एवं प्रताड़ना आज भी जारी है। उन्हें पुरूषों के समान न समझना उचित सम्मान नहीं देना यही लैंगिक भेदभाव है। समाजशास्त्रियों का मानना है कि स्त्रियों के प्रति भेदभाव का रवैया हमारे समाज और संस्कृति की देन है।

लिंग विभेदीकरण हमारे समाज की एक ऐसी सच्चाई है जो शायद इस संसार के निर्माण के साथ ही जन्म ले चूका था। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है कि विधाता ने जब स्त्री को बनाया तभी से यह भावना या सच्चाई या फिर भ्रम लोगों के अंदर हुई कि स्त्री एक कमजोर वर्ग है। उस समय कि यह बात हर काल में स्त्री के उपर अलग–अलग

दृष्टिकोण से उसे कमजोर सिद्ध करके ऊपर हजारों यातनाएँ दी गई।

समय बदलता गया पर औरतों को समाज में देखने का दृष्टिकोण थोड़ा बहुत ऊपर नीचे हुआ, हर युग में औरत को कमजोर समझ कर सताया गया। न जाने कैसी–कैसी यातनाएँ दी गई ताकि वह पुरूषों की बराबरी न कर सकें। हमेशा औरत को शारीरिक और मानसिक यातनाओं का सामना करते हुए अपने परिवार और बाल–बच्चों की परवरिश करनी पड़ी। कभी किसी ने जुल्म का विरोध किया तो उसे या तो घर से बेघर होना पड़ा या फिर उसे मुहल्ला समाज तक से बाहर कर दिया गया। प्राचीनकाल से अबतक देखा जाय तो स्त्रियों के हालात में जमीन आसमान का फर्क आया है। परंतु वह एक सोच जो मन में समाज में, हमारे रहन–सहन में, खान–पान में बसा है, जो समाप्त होने का नाम नहीं नहीं लेता वह ये कि ''लड़की को पराये घर जाना है।'' इसी सोच का व्यापक असर लड़की के पैदा होने के साथ ही शुरू हो जाता है और फिर उसकी परवरिश को उसी सोच के अनुसार किया जाता है, जहाँ उसके साथ उठते–बैठते, खाते–पीते, पहनते–ओढ़ने सब पर भेदभाव करते देखा गया है। ज्ञातव्य है कि ऐसा हर परिवार में नहीं होता। कुछ लोग अपने घर और बच्चों की परवरिश इन भेदभाव से परे होकर करते हैं। वे शिक्षित भी हो सकते हैं और अशिक्षित भी। हर प्रकार से सुखी रहकर वे अपने सोच को स्वतंत्र रखते हैं।

अब हमारे समाज में जो लिंग भेदभाव की परंपरा चली आ रही है उस पर विचार करने से पता चलता है कि यह एक वृहद समस्या है जो हमारे सोच में बसा है जिसका कोई इलाज नहीं किया जा सकता। हो सकता है कि हमें और हमारे समाज को अपनी सोच और किसी भी बात को एक ही दृष्टिकोण से देखना बदलना पड़ेगा। लिंग भेदभाव की समस्या एक आम और साधारण तौर पर हमारे समाज में हर पल देखा जाता है परंतु यह आम समस्या नहीं है बल्कि एक विकराल रूप लिये हमारे पर, परिवार और समाज को हर पल खोखला किये जा रहें हैं। यह बात तो सोचने योग्य है कि एक गृहस्थी की शुरूआत स्त्री और पुरूष से होती है, परंतु जब परिवार एक बच्चे के रूप में बालक को अधिक महत्व देता है तो क्या बालिका को पैदा ही नहीं होना चाहिए? क्योंकि देखा गया है कि जब बेटी पैदा होती है तो लोग खुश नहीं होते। ऐसा शायद इसलिए होता है क्योंकि बेटी मां–बाप को वह खुशी या काम करके खिला नहीं सकती और तो वह और पराये घर चली जाती है, जिसमें उसको दहेज के रूप में मोटी रकम और ढेर सारा समान देना पड़ता है। प्राचीन काल से ही लड़की लक्ष्मी देवी का और खुशहाली का प्रतीक माना जाता है परंतु ये केवल बोल–वचन बन कर रह गया। कहते हैं धर्म और समाज साथ–साथ चलता है, धर्म और परंपराओं के बिना समाज नहीं चल सकता और समाज के बिना धर्म। प्राचीन काल से ही लोगों को मान्यता रही है कि बेटों से ही वंश आगे बढ़ता है और इस कारण बेटा चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो मां–बाप उसे खुद से अलग नहीं करते और बेटियां चाहे कितनी भी जिम्मेदार क्यों न हो उसे खुद से अलग करनी ही पड़ता है क्योंकि यही हमारा धर्म कहता है हमारी परंपरा और हमारी समाज इसी बात को मानते हुए आ रहा है। इसी धर्म और परंपराओं के चक्कर में न जाने औरतों के साथ कितनी ही यातनाओं की अनदेखिया की गई है।

आज हम 21वीं शताब्दी के भारतीय होने पर गर्व करते हैं। परंतु बात जब सामाजिक मुद्दे की आती है तो लिंग भेद–भाव से उत्पन्न होने वाली विचार से शर्म आती है। लिंग सामाजिक–सांस्कृतिक शब्द है, सामाजिक परिभाषा से संबंधित करते हुए समाज में पुरूषों और महिलाओं के कार्यों और व्यवहारों को परिभषित करता है जो एक जैविक और शारीरिक घटना है। अपने सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं के बीच लिंग पुरूष और महिलाओं के मध्य शक्ति के कार्य का संबंध है जहां पुरूष को महिलाओं से श्रेष्ठ माना जाता है। इस प्रकार लिंग को मानव निर्मित सिद्धांत समझना चाहिए, जबकि सेक्स मानव की प्राकृतिक या जैविक विशेषता है। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव संसार में हर स्थान पर प्रचलित है। भारतीय समाज में तो यह भेदभव बहुत अधिक देखने को मिलता है। भारतीय समाज में तो यह भेदभाव ''पितृसत्तात्मक'' व्यवस्था में निहित है। प्रसिद्ध समाजशास्त्रीय सिल्व्या वाल्वे के अनुसार ''पितृसत्तात्मक'' सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था है जिसमें आदमी औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता है उसका दमन और शोषण करता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अपनी वैधता हमारे धार्मिक विश्वासों, चाहे वे हिन्दू मुस्लिम या किसी अन्य धर्म से ही क्यों न हो से प्राप्त की है। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी ने अपने आप की धर्म का सहारा लेते हुए यही बताया। किसी के भी मुंह से आप यह बात आसानी से बोलते हुए सुन सकते हैं कि पति परमेश्वर है। अतः उसका क्रोध होना, मारना–पीटना या अन्य कोई ऐसी बात या

व्यवहार को स्त्री को चुपचाप सहना चाहिए। उसका विरोध करने वाली औरतों को समाज अच्छी नजर से नहीं देखता। मुस्लिम परिवार में भी औरतों के लिए उसका पति सर का ताज होता है इसलिए यहां भी महिलाओं अपने पति का मारना–पीटना, उनका हर बात में दखल होना जरूरी है। अगर किसी ने इस बात पर सवाल करना चाहा तो या विरोध किया तो उसे बदएखलाक कहा जाता है। सिल्विया वेबले ने लिखा है, ''पितृसत्ता को सामाजिक संरचना और क्रियाओं की ऐसी व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें पुरूषों का स्त्रियों पर वर्चस्व रहता है, और वे उसका शोषण और उत्पीड़न करते हैं।''

मानव समाज की आधारशीला स्त्री और पुरूष है। किसी एक के अभाव में समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। इसके बावजूद स्त्रियों की स्थिति बराबर नहीं मानी जाती रही है। यद्यपि भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति को बड़े ही आदर्श रूप में प्रयुक्त किया गया है। हिन्दू दर्शन में स्त्रियों की अर्द्धागिनी के रूप में चित्रण किया गया है। देवियों के विभिन्न रूपों– सरस्वती, लक्ष्मी, काली एवं दुर्गा आदि का स्त्री रूप में ही वर्णन मिलता है, भारत को भी भारतमाता के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है, परंतु व्यवहार में स्त्रियों की स्थिति पुरूषों के समान नहीं देखी गयी और उन्हें उचित सम्मा नहीं मिला। भारतीय स्त्रियों की स्थिति विभिन्न कालों में निम्न होती चली गई। इस निम्न स्थिति के अनेक कारण हैं, जैसे कि – अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता, संयुक्त परिवार, जाति व्यवस्था, पुरूष प्रधान समाज इत्यादि।

1. अशिक्षा :– स्त्रियों की निम्न स्थिति का सार्वाधिक महत्वपूर्ण कारण अशिक्षा रही। वैदिक काल के बाद से ही स्त्रियों को शिक्षा से दूर करने की क्रिया प्रारंभ की गई। शिक्षा के अभाव में अनेक अंधविश्वासों व कुसंस्कारों से स्त्रियों घिर गई। फलतः उनका दिल व दिमाग संकुचित होता चला गया। अशिक्षा के कारण उनका एकमात्र काम प्रजनन, लालन–पोषण और पति सेवा हो गया और फिर वे अपने सीमित कार्यों से इस प्रकार जुड़ गईं कि उनका बाहर निकलना संभव नहीं हो पाया।

2. आर्थिक निर्भरता :–भारतीय स्त्रियों की निम्न स्थिति का दूसरा और प्रधान कारण आर्थिक निर्भरता रही है। आर्थिक मामलों में स्त्रियां जन्म से मरण तक पुरूषों पर निर्भर रहीं। प्रारंभ में पिता पर, विवाह के बाद पति पर और फिर वृद्धावस्था में पुत्र पर। इन निर्भरता ने स्त्रियों को इतना निम्न में पिता पर, विवाह के बाद पति पर और फिर वृद्धावस्था मे पुत्र पर। इन निर्भरता ने स्त्रियों को इतना निम्न स्थिति में ला दिया कि पुरूषों के बराबर होने की बात सोचना भी उनके लिए असंभव प्रतीत होने लगा।

3. संयुक्त परिवार :– भारतीय समाज में एक मूल आधार संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था रहा है। इस व्यवस्था में विभिन्न रूपों में स्त्रियों की स्वतंत्रता पर अंकु''ा लगाया हैं एक तरफ बचपन में लड़का व लड़की के अन्तर को स्पष्ट करते हुए लड़कियों को अधिक दबा कर रखा गया। घर की चारदिवारी में स्त्रियों को रखना सम्मान को घोतक बताया गया। साथ ही उपदेशों के माध्यम से पुरूषों को ही महत्वपूर्ण बताया गया। साथ ही उपदेशों के माध्यम पति सेवा की शिक्षा दी गई तथा गृह कार्य ही एकमात्र कार्य माना गया। इस परिवेश में भी स्त्रियों की स्थिति निम्न से भी निम्न हो गई।

4. जाति व्यवस्था :– भारतीय समाज का दूसरा मूल अधिकार जाति व्यवस्था रहा है। इस व्यवस्था ने भी स्त्रियों की निम्न स्थिति प्रदान करने में योगदान दिया है। एक तरफ इसने सार्वजनिक कार्यों व क्षेत्रों में स्त्रियों की सहभागिता पर अंकु''ा लगाया। दूसरी तरफ इस व्यवस्था के द्वारा लड़कियों का विवाह होने लगा। फिर विधवा विवाह पर निषेध लगा और इसी व्यवस्था में सती प्रथा को लागू किया गया।

5. पुरूष प्रधान समाज :– भारतीय समाज को पुरूष प्रधान माना जाता रहा। जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों की प्रभुता को स्वीकार किया गया। इसलिए उनके द्वारा बनाए गए रस्म–रिवाज, रहन–सहन, एवं जीवन मूल्यों में स्त्रियों को पुरूषों के अधीन रखा गया।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हमारे भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति दयनीय एवं निम्न होने के कई कारण रहे हैं।

आधुनिक भारत में स्त्रियों के पक्ष में कई सारी सुविधायें लाई गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का चौतरफा विकास हुआ जिसमें स्त्रियों की भी स्थिति बेहतर करने के कई प्रयत्न हुए और हो रहे हैं। अब महिलाओं ने हर क्षेत्र में यथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त किया है। वर्तमान में स्त्रियाँ पुरूषों से पीछे नहीं है। हर व्यवस्था में उनकी भागीदारी देखी जा रही है। महिलाओं की स्थिति में सुधार की स्थिति शिक्षाा के प्रसार से हो पायी। आज लड़कियों को पढ़ने–पढ़ाने का जो चौतरफा विकास नजर आ रहा है वह हमारे समाज का बहुत बड़ा सुधार है। हमारे समाज में ऐसी

बहुत सी व्यवस्थाएँ थी लोगों को था कई सही सोच रखने वाले पुरूषों का भी बहुत योगदान रहा है। शिक्षा का प्रसार पहला हथियार है जिसने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाया है।

संदर्भ सूची –

1. सिंह, गोपी रमण प्रसादः लिंग एवं समाज
2. बुझा, सिमौन दः द सेकेन्ड सेक्स।
3. मेनन, निवेदिता : नारीवादी विचारधारा में सेक्स जेंडर विभेद : नारीवादी राजनीति, संघर्ष एवं मुद्दे।

References

a. Amartya Sen, 'Gender: Seven Types of Inquility" in Human Right Vision, Issue No.22 December 8, 2001.
b. Judith Butler 'Gender Trouble" Routledge, New York, 1990.
c. Alison Jaggar 'Feminist Politics and Human Nature" Roman and Allanheld Sussex 1988.
d. K.M. Panikkar, Hindu Society at Cross Roads.5. Onlooker, January 15, 1986.